महात्मा गाँधीजी की विचारधारा

प्रा. डॉ. हणमंत महादेव सोहनी, सदाशिवराव मंडलिक महाविद्यालय, मुरगुड, कागल, कोल्हापुर

प्रस्तावना: -

महात्मा गाँधी जी का जन्म 2 अक्टूबर सन 1869 ई. को पोरबंदर (सुदामापुरी) में हुआ। गाँधी जी जब सात वर्ष के थे तब पोरबंदर से उनके पिताजी राजस्थानिक कोर्ट के सदस्य होकर राजकोट चले गए। मास्टर के प्रति गाँधी जी का आदर कभी कम नहीं हुआ। बड़ों के दोष न देखने का गुण उनमें स्वाभाविक ही था। तेरह साल की उम्र में कस्तूरबाई से गाँधी जी का बाल विवाह हुआ। कई कठिनाइयों का सामना उन्हें बचपन से ही करना पड़ा।

आज भारत पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में फँस जाने के कारण पश्चिम से कुछ अधिक ही भौतिकवाद, भोगवाद आदि के गिरफ्त में आ गया है। आज हम संयम और सादगी की जगह भोगवाद,अहिंसा की साधना के बदले आणविक हिंसा की तरफ बढ़ रहे हैं। पाश्चात्य संस्कृति का मूल कारण इसकी भोगवादी सभ्यता है। पाश्चात्य सभ्यताके संकट की आहट गाँधी जी को थी।भारत जैसे खंडप्राय देश के लिये "स्वराज्य" शब्द का सांस्कृतिक-अर्थ-गर्भितहै। हमारा दुर्भाग्य यह है कि आज इसका अर्थ केवल विदेशी दासताओं से मुक्ति पाना यह माना जाता है। लोकमान्य तिलक के "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है"इस मंत्र का अर्थ यही मान लिया गया। अत: गाँधीजी के लिये यह अपेक्षित था कि वे स्वयं"स्वराज्य" की भारतीय अवधारणाओं को स्पष्ट कर दे ।

प्राचीन काल में भारतीय प्रशासन व्यवस्था में सम्पूर्ण-धर्ती के लिये एक ही प्रशासन व्यवस्था थी। अथर्ववेदमें भी वैश्विक राष्ट्रीयता का स्वर सुनाई पड़ता है। ऋग्वेद में स्वराज्य शब्द व्यापक अर्थ में है । असल में भारतीय संस्कृति वैश्विक है, वसुधैव"कुटुंबकम्"को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। भारतीय राष्ट्र की विचार धारणा देश, काल तथा वातावरण से भी अलग एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संकल्पना है। अथर्ववेद में लिखित मानव समाज की सारी जातियों के समस्त वर्गों के नरनारियों में सहृदयता त-था किसी प्रकार के पारस्परिक भेदभाव और बैर की भावना का सभीओर अभाव दिखाई देता है।

मूल सिद्धांत

गाँधी जी अपने सपनों का स्वराज्य गरीबों का स्वराज्य मानते हैं । वे संपूर्ण स्वराज्य का अर्थ मनते हैं कि भारत का उद्धार। संपूर्ण स्वराज एक ऐसी स्थितिवे मनते हैं कि जिसमें गूंगे बोलने लगते हैं और लंगड़े चलने लगते हैं। वे मनते हैं किस्वराज्य का अर्थ विदेशी नियंत्रण से पूरी मुक्ति और पूर्ण आर्थिक स्वतंत्रता। गाँधीजी का असल मेंस्वराज्य जातिविहीनवर्गविहीन समाज ,विहीनस्वराज्य का चित्र है। इसमें न कोई ऊँचा है और न कोई नीचा है ,तो सारे काम एक से ही हैं और सारे काम की मजदूरी भी एक सी है।

स्वराज्य तो सबके लिये है परंतु विशेषत: जो मेहनत कश, दीन, दुखी ,आँधेभूखे एवं , बीमार लोग हैं। उनके अनुसार हिंद स्वराज्य जनता का या सत्य एवं इंसाफ का राज्य है। गाँधी जी भारत को केवल अंग्रेजी दासता से ही नहीं अन्य सभी दासताओं से मुक्त करना चाहते थे। उनके लिए स्वराज्य का आंदोलन आत्मसंयम और आत्मवृद्धि का आंदोलनरहा है। अतः स्वराज्य का आरंभ आत्मसंयम एवं आत्मवृद्धि से होता है।ग्राम स्वराज्य का मूल्यांकन हम इसके बुनियादी सिद्धान्तों की कसौटियों पर उनको कस कर करते हें। गाँधीजी ने ग्राम स्वराज्य के कुछ पहलुओं को निरूपित किया है, जो निम्न है -

1.मानव का कल्याण - हम जो भी कार्य करें उसमें प्रमुख्य विचार मानव का और उसके कल्याण का होना चाहिये।इसका मुख्यउद्देश्यहै मानव को सुखी बनाना। उसकी बौद्धिक और नैतिक उन्नति करना। प्रस्तुत उद्देश्य सत्ता के विकेंद्रीकरण से सध्या हो सकता है। केंद्रीकरणअहिंसावादी समाज-रचना से भिन्न है। सत्ता केंद्रीकरण की रचना केवल भारत की ही नहीं तो सारी दुनियां की होनी चाहिये। जिसमें हर एक मनुष्य को कम से कम इतना काम मिले कि वो दो वक्त की रोटी, तन को ढकने के लिए कपड़ा, सोने के लिए मकान, अच्छी शिक्षा और चिकित्सा की आवश्यकतायें पूरी हो सकें। मानव कल्याण सच्ची योजना तो वह होगी जो भारत की समूची मनुष्य शक्ति का अच्छे से अच्छा उपयोग करें।

गाँधी जी ने स्वराज्य को प्राचीन सांस्कृतिक विरासत के रूप में ही केवल नहीं अपनाया तो आधुनिक क्रांतिकारी परिप्रेक्ष्य में पारिभाषित करते हुए उसके धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं नैतिक मूल्यों को उजागर किया है । गाँधी जी का स्वराज्य से अभिप्राय है "लोक सम्मति केअनुसार होने वाला भारत वर्ष का शासन।"[1]आज मुट्ठी भर शहर भारत के अनावश्यक अंग है और केवल देहातों का जीवन-रक्त चूसने के पाप हेतु के लिये ही हैं। अपने उद्धतापूर्ण अन्यायों और अत्याचारों के कारण शहर गाँवों के जीवन और स्वतंत्रता के लिये हमेशा खतरा बने रहते हैं।

2.श्रम -अपनी रोटी कमाने के लिये हर आदमी को श्रम करना ही पढ़ता है। मानव को अपनी बौद्धिक शक्ति का उपयोग अपनी दैनिक आजीविका को पूरा करने के लिए करना पड़ता है।या उससे ज्यादा प्राप्त करने के लिये नहीं बल्कि सेवा के लिये, परोपकार के लिये करना चाहिये। यह मानना कि किताबों से ही, मेज कुर्सी पर बठने से ही ज्ञान मिलता है, बुद्धि का विकास होता है, घोर अज्ञान और भारी वहम है। बौद्धिक शक्ति को सही रूप से वेग देने के लिये भी शरीरश्रम की जरूरत है। गांवों को अपने पाँव पर खड़ा होना होगा-अपनी जरूरतें खुद पूरी कर लेनी होंगी, ताकि वह अपना सारा कारोबार स्वयं चला सके।

महाप्रयत्न करके धनिक स्वयं संरक्षक बन जाते हैं।दुसरी ओर करोड़ों लोग भूखे मरते हुए अहिंसा के नाम से कुचले जाते हैं।गाँधीजी इस प्रकार की कायरता नहीं चाहते थे। इस अन्याय का प्रतिकार सामूहिक असहयोग से संभव है। आर्थिक स्थिति के संदर्भ में गाँधी जी का विचार है,"कोई धनवान गरीबों के सहयोग के बिना धन कमा नहीं सकता।"[2]आर्थिक असमानता को दूर करने का यह अचूक अहिंसक रास्ता है।

3. सामाजिक स्थिति- हर एक को लगता है कि अपना जीवन सफल बने । अपना विकास के और अपना जीवन सफल बनाने के समान अवसर मिलते रहने चाहिये। सच्चा अर्थशास्त्र तो सामाजिक न्याय की हिमायत करता है, वह समान भाव से सबकी भलाई जिनमें कमजोर वर्ग भी शामिल हैं-प्रयत्न करता है।सच्चा अर्थशास्त्र कभी भी नीतिधर्म के ऊँचे से ऊँचेआदर्श का विरोधी नहीं होता। सामाजिक स्थिति के संदर्भ में गाँधी का विचार है,"ऐसी स्थिति लाना चाहते थे, जिसमें सबका सामाजिक दरजा समान माना जाय।उनका आदर्श तो समान वितरण ही है, लेकिन जहाँ तक मैं देखता हूँ वह पूरा होने वाला नहीं। इसलिये मैं न्याय पूर्ण वितरण के लिये कार्य कर रहा हूँ।"[3]बहुत बड़े-बड़े शहरों का होना इस रोग का एक लक्षण मात्र है। गाँधीजी ने इस बात को "असंख्य बार दुहराया कि भारत अपने कुछ शहरों में नहीं बल्कि सात लाख गाँवों में बसा है। किंतु अधिकांश आबादी लगभग भुखमरी की हालत में रहती है, दस प्रतिशत अधभूखी रहती है और लाखों लोग चुटकीभर नमक और मिर्च के साथ मशीन का पालिश किया हुआ निःसत्व चावल या रूखा-सूखा अनाज खाकर अपना गुजारा करते हैं।

4. धर्मशास्त्र -गाँधी जी कहते हैं, "धर्मशास्त्र की तथा दुनिया के धर्मों की थोड़ी जानकारी तो हुई, पर उतना ज्ञान मनुष्य के बचाव के लिए काफी नहीं होता। आपत्ति-काल में मनुष्य को जो वस्तु बचाती है, उसका उस समय उसे न भान होता है, न ज्ञान। नास्तिक बच जाने पर कहता है कि मैं संयोगवश बच गया। आस्तिक ऐसे अवसर पर कहेगा कि मुझे ईश्वर ने बचाया परिणाम के उपरांत वह यह अनुमान कर लेगा कि धर्मों के अभ्यास से, संयम से ईश्वर उसके हृदय में प्रकट होता है। ऐसा अनुमान करने का उसे अधिकार है, पर बचते समय वह नहीं जानता कि उसे उसका संयम बचाता है या कौन बचाता है। जिसे अपने संयम के बल का अभिमान रहता है, उसके संयम को धूल में मिलते किसने नहीं देखा है? ऐसे अवसर पर शास्त्रज्ञान तो खोखला सिद्ध होता है।"[4]अतः इस बौद्धिक धर्मज्ञान के मिथ्यात्व का अनुभव मुझे विलायत में हुआ। पहले भी ऐसे संकटों में से मैं बचा, उसका विश्लेषण करना सम्भव नहीं। उस समय मेरी उम्र बहुत कच्ची थी, पर अब तो मैं बीस साल का था। गृहस्थाश्रम का काफी अनुभव ले चुका था।

5.सत्ता का विकेंद्रीकरण- सत्ता के केंद्रीकरण या विकेंद्रीकरणमें हिंसा निर्माणहै। केंद्रीत अर्थव्यवस्था को कायम रखने एवं उसकी रक्षा करने के लिये हिंसाबल अनिवार्य है। उसे विदेशी आक्रमण का सबसे अधिक खतरा रहेगा। स्वावलंबी और स्वाश्रयी देहाती समाज के कारण भी अहिंसक समाज व्यवस्था का निर्माण हो सकता। सत्ता के केंद्रीत व्यवस्था में शोषण भी निहित है औरशोषण हिंसा का उद्रेक है। ग्राम स्वराज्य भारत की नैतिक-आध्यात्मिक

तथा सांस्कृतिक विरासत में अभिनिहित है। जिस प्रकार से मनुष्य के जीवन में उन्नति का एक शुभ क्षण आता है, उसी प्रकार समाज एवं संस्कृति के जीवन में ऐसा क्षण आता है।

6. सर्व-धर्म-समभाव– अपनेपड़ोसियों से प्यारकरना एक सार्वभौम धर्म है। प्रभु ईसामसीह के वचन कोलिखते हैं, "अपने पड़ोसियों से प्यार करो। हर मनुष्य का पहला कर्तव्य अपने पड़ोसी के प्रति है। यही जागतिक सेवा का आधार है।"[5]गांव के सारे काम पड़ोसियों के सहयोग के आधार पर करना महत्वपूर्ण है।मानव एक दुसरे के सहकार्य से कई पद्धतियों का उपयोग करके अपने हित को साध्य कर सकते हैं।

सर्व-धर्म-समभाव में सारे धर्म सत्य को प्रकट करते हैं,जिसके बारे में कहा गया है, " ग्राम स्वराज्य में हर धर्म की अपनी पूरी और बराबरी की जगह होगी।"[6]समाज-विज्ञान के क्षेत्र में छोटे-मोटे परिवर्तन का मूल्यांकन काल सीमा में हो सकता है। अहिंसक समाज परिवर्तन की प्रक्रिया के साथ अहिंसक समान व्यवस्था अपरिहार्य है। सहजीवन युग-धर्म है। यही सर्वोदय या ग्राम स्वराज्य भी है।

सारांश:-सारांश में हम कह सकते हैं कि अहिंसा के आदर्श के अनुसार धनिक को अपने पड़ोसी से एक कौड़ी भी ज्यादा रखने का अधिकार नहीं। सम्पत्ति तो सब भगवान की है। मार्क्स भी कहता है कि पूँजी समाज की है। इसलिये या तो हिंसा का आश्रय लेकर पड़ोसी से उसकी सम्पत्ति छीनी जाय या उसे प्रामाणिकता से उसका ट्रस्टी बनाया जाय ताकि

अक्षर ज्ञान न तो शिक्षा का अंतिम लक्ष्य है न उसका आरंभ है। गाँधी जी ग्राम स्वराज्य में बच्चे की शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हैं।वह अपनी शिक्षा का आरंभजिस क्षण से करे उसी क्षण से उसे उत्पादन के योग्य बनाना पसंद करते थे। शिक्षा से उनका अभिप्राय बालक की शरीरमन तथा आत्मा की उत्तम क्षमताओं का सर्वांगींण विकास , करना था।

गाँधीजी ने इन मूल सिद्धांतोंके अतिरिक्त ग्राम स्वराज्य की सफलता के लिय कई मुद्दे बताये हैं जिसमें खेती, रोजगार, पशुपालन आदि को महत्व स्थान दिया है। किसान को दुनिया का पिता कहा गया है।परमात्मा यदि देने वाला है निवास ,आहार की कमी,तोकिसान उसका हाथ है। सार्वजनिक स्वच्छता ,आदि महत्वपूर्ण है। जमीन उसी की होनी चाहिये जो मेहनत करनेवाले किसान मजदुर हो।न कि घर बैठकर खेती करने वाले मालिक या जमींदार की। गाँधीजी किसानों एवं जमींदारों के बीच कोई वैमनस्य या हिंसक संघर्ष नहीं चाहते थे।

आज समूचे देश की दो मुख्य समस्यायें हैं, अलगाव एवं दरिद्रीकरण। आज लाखों गांवों से इन दोषों से मुक्ति दिलाने का विधान सार्थक है। लेकिन इसके लिये तंत्र के रूप में ग्राम स्वराज्य और ग्राम संगठन जरूरी है। अत: गाँधीजी के विचरों की आज भीऔर भविष्य में भी आवश्यकता रहेगी, जिसमें कोई शक नहीं।

संदर्भ सूची

1. गाँधी मो. क. - यंग इंडिया पृ.311
2. गाँधीमो. क.-हरिजनपृ. 401
3. गाँधीमो. क. - यंग इंडिया पृ. 271
4. गाँधी मो. क. अनुवाद विश्वंभर दत्त गौड़ - सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा पृ.73
5. गाँधी मो. क. - सत्याग्रह आश्रम का इहिास पृ.461
6. गाँधी मो. क. - सत्याग्रह आश्रम का इतिहास पृ. 771